साहित्य अकादेमी

15 अप्रैल 2011

लेखक से भेंट

हिमांशु जोशी

हिमांशु जोशी की कृतियों का केन्द्र बिन्दु मात्र विचार ही नहीं, विचारशील मानव भी है। वह मानते हैं कि 'वादों' के विवाद का अपना महत्त्व है, पर 'वाद' या 'इज़्म' मनुष्य से बड़े नहीं होते! कबीर का कौन-सा 'वाद' था? हिमांशु जोशी की मान्यता है कि जो विचार ऊर्ध्वगामी नहीं होते, वे अंततः किसी भी मंज़िल तक पहुँचा पाने में अपनी सार्थक भूमिका का निर्वाह नहीं कर पाते। राहुल जी 'मज्झिमनिकाय' का एक आप्त वचन प्रायः दुहराते थे—

"मैंने धर्म को नाव की तरह लिया है। नदी पार करने के पश्चात् नाव को तट पर ही छोड़ देते हैं, उसे सिर पर ढोकर आगे नहीं ले जाते।" यही मान्यता हिमांशु जोशी की भी लगती है।

हिमांशु जोशी की कृतियाँ एक साथ कई धरातलों पर सोचने के लिए विवश करती हैं। अचरज होता है कि इतना वैविध्य एक ही व्यक्ति की रचनाओं में एक साथ कैसे संभव हो सकता है! उनके बहुचर्चित उपन्यास *कगार की आग* को एक दृष्टांत के रूप में लिया जा सकता है। जब हिन्दी साहित्य में नारी-विमर्श शब्द प्रचलित नहीं हुआ था, तब नारी-विमर्श या दलित-विमर्श को रेखांकित करती यह कृति प्रकाश में आई। इसका लगभग सभी भारतीय भाषाओं के अलावा—चीनी, बर्मी, नार्वेजियन, इटालियन, अंग्रेज़ी आदि में रूपांतरण हुआ; फ़िल्म बनी; मंचन हुआ; आकाशवाणी में धारावाहिक रूप में प्रसारण हुआ; पुस्तक रूप में कई संस्करण हुए।

तब बीजिङ् विश्वविद्यालय में हिन्दी के प्राध्यापक प्रो. ल्यु-को-नान ने लिखा, "यह तो मेरे अपने ही परिवार की सच्ची कहानी है। आपने जो लिखा था, वह सब हमारे घर में घटित हुआ था। आपके उपन्यास की नायिका गोमती की तरह मेरी भांजी भी सुंदर थी। उसका पति भी अपंग था। चीन में तब ज़मींदारी प्रथा थी। शोषण था। अन्याय था। क्रोधित होकर एक दिन बिना बात उसकी और उसके बच्चे की ज़मींदार ने हत्या करवा दी। आपके उपन्यास और उसमें मात्र इतना-सा अंतर है कि आपकी नायिका गोमती और उसका बच्चा अभी जीवित हैं। मैं इसका अनुवाद चीनी में कर रहा हूँ, ताकि चीन के लोग भी उसकी यह दुःखद गाथा जान सकें।"

इस उपन्यास के बर्मी भाषा में अनुवादक, बर्मी लेखक ऊ-पारगू ने कहा कि यह हमारे बर्मी ग्रामीण समाज के संघर्षों की जीवंत कहानी है। नार्वेजियन लेखिका, 'नार्वे लेखक संघ' की अध्यक्षा तूरिल ब्रेक्के ने कहा, "नारी शोषण पश्चिम के समृद्ध समाज में भी कम नहीं है। मैं द्रवित हूँ। इस कृति के नार्वेजियन अनुवाद की भूमिका मैं लिखूँगी।"

हिमांशु जोशी के दूसरे आंचलिक उपन्यास *अरण्य* की कथा-व्यथा कुछ दूसरे तरह की है। उसके संघर्ष भी बहुत कुछ सोचने के लिए विवश करते हैं।

अंधेरा और, कांछा की पृष्ठभूमि बिल्कुल अलग है। *कांछा* नेपाल के ग्रामीण जन-जीवन पर आधारित है तो *अंधेरा और* थारू जीवन पर। *सु-राज* में उत्तराखण्ड का पर्वतीय आंचलिक परिवेश है।

एक अनपढ़ ग्रामीण, जिसने कभी गाँधी को नहीं देखा और अंग्रेज़ों को भी नहीं, वह जीवनभर अंग्रेज़ों के विरुद्ध लड़ता रहा। अंत में वह गाँधी से बड़ा गांधीवादी बनकर उभरता है और अपनी आहुति दे देता है।

इस पर आधारित फ़िल्म बनी। इंडियन पेनोरमा के अंतर्गत अंतरराष्ट्रीय फ़िल्म समारोहों में उसने भारत का प्रतिनिधित्व किया। अभिनेता ए.के. हंगल ने कहा था—"मेरे जीवन की सर्वश्रेष्ठ फ़िल्म है यह।"

इन सबसे अलग दुनिया है *छाया मत छूना मन* की। वसुधा और देवेन शरत् के जीवंत पात्रों की याद दिलाते हैं। *तुम्हारे लिए* चरम है। सुधी समालोचकों ने इस कृति को बेजोड़ कहा। एक दाक्षिणात्य इंजीनियर कवि विजय कुमार

सप्तर्षिक ने लिखा—"*तुम्हारे लिए* मैंने 250 से अधिक बार पढ़ा है। आज भी मैं विराग और मेहा की कहानी को कहानी नहीं सच मानता हूँ। नैनीताल जाकर इस उपन्यास में वर्णित स्थानों को स्वयं अपनी आँखों से देखना चाहता हूँ।"

महासागर

एक *महासागर* के अंदर कई महासागर हैं। कई-कई 'यंत्रणा-द्वीप'। तब एक परिवार की ही नहीं, एक युग की भी गाथा बन जाती है वह। कई धरातलों पर कई कहानियाँ साथ-साथ चलती हैं। हिमांशु जोशी का रचना कौशल अद्वितीय है।

मानव-संबंधों की उजास किसी-न-किसी रूप में हर रचना में देखने को मिलती है। दुःख है तो दुःख के निवारण का मार्ग भी। कथाशिल्पी शरतचंद्र की तरह हिमांशु जोशी की रचनाओं की भाव-भूमि भी विशिष्ट है। वे कहीं कुछ न कहते हुए भी अनायास बहुत कुछ कह जाती हैं।

यातना शिविर में एक और पराकाष्ठा है यथार्थ की। लेखक ने सेल्युलर जेल की जो तीर्थ-यात्रा की, उसे बहुत गहराई से आत्मसात किया। उन काल-कोठरियों में बाबा भानसिंह, बारीन्द्र घोष, सावरकर, भाई परमानंद आज भी बैठे मिल जाते हैं। टाट के फटे चीथड़े आज भी लटके दीख जाते हैं, लोहे के जंग लगे टूटे बर्तन भी!

फाँसी की वह गोल रस्सी हवा में झूलती!

हिमांशु जोशी ने कथा-प्रयोग भी कम नहीं किए। कम शब्दों में अधिक बात कहना उनकी विशेषता रही है। उन्होंने आनेवाले कल की कहानियों को एक दिशा-दृष्टि दी है। बृहत उपन्यास के स्थान पर लघु उपन्यासिकाएँ लिखना कम चुनौतीपूर्ण नहीं। स्कैण्डेनेवियाई साहित्य में ऐसे अनेक प्रयोग हुए हैं। कम वक्त में अधिक कहना आनेवाले साहित्य की भाव-भूमि होगी। वह कहानी नहीं कविता भी होगी। संस्मरण और यात्रा-वृतांत भी। मात्र दर्शन ही नहीं, स्थूल भी।

हिमांशु जोशी का कथा-संसार इन सबमें अधिक व्यापक एवं विस्तृत है। इंद्रधनुष में मात्र सात रंग समाए होते हैं, पर इन कहानियों के रंग अनगिनत हैं। अग्रणी कथाकार कमलेश्वर ने हिमांशु जोशी की कहानियों के विषय में कहा था—

"स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कहानी को हिमांशु जोशी की कहानियों के बग़ैर पहचाना नहीं जा सकता। हिन्दी कहानी ने जितनी भी रचनात्मक मंज़िलें तय की हैं, उन रचना-यात्राओं और मंज़िलों पर उनकी कोई न कोई कहानी साथ चलती या मंज़िल पर मौजूद मिलती है।

हिमांशु जोशी कहानी नहीं लिखते और न इनकी कहानियाँ बँधे-बँधाए ढाँचे में रूपाकार ग्रहण करती हैं, बल्कि वे मानस को उद्वेलित करके अपना विधागत स्वरूप और महत्ता प्राप्त करती हैं। घटना, बात या सरोकार को कहानी की संवेदनात्मक सिद्धि दे देना उनकी नितांत

धर्मपत्नी पार्वती जोशी के साथ

प्रधानमंत्री राजीव गाँधी द्वारा सम्मानित

अपनी विलक्षण कथन-प्रतिभा और उपलब्धि है। उनकी कहानियों में रचना और जीवन की अद्वितीय अन्विति है... कैसे जीवन यथार्थ रचना बनता है और रचना कैसे जीवन-यथार्थ का पर्याय बन जाती है, यह उनकी दुर्लभ सृजन की कालजयी प्रतीति है, जो स्मृति की धरोहर बन जाती है। उनकी कितनी कहानियों को याद किया जाए—'जलते हुए डैने', 'अन्ततः', 'रास्ता रुक गया है', 'काला धुआँ', 'तपस्या' से लेकर विदेशी तथा अन्य अनुभव-भूमियों पर लिखी—'सागर तट के शहर', 'अगला यथार्थ', 'हैनसांड', 'इस बार' आदि को रेखांकित करें, तब भी दर्जनों उत्कृष्ट कहानियाँ रेखांकित किए जाने की माँग करती हैं।

"यह सही है कि हिमालय की हर चट्टान से गंगा नहीं निकलती, लेकिन हिमांशु जोशी के अनुभव-जन्य हिमालय की प्रत्येक चट्टान से एक गंगा या एक उर्वरा नदी अवश्य प्रवाहित होती है।"

प्रमुख कृतियाँ

उपन्यास

अरण्य (1965) *किताबघर प्रकाशन*
महासागर (1971) *किताबघर प्रकाशन*
छाया मत छूना मन (1974) *भारतीय ज्ञानपीठ*
कगार की आग (1975) *भारतीय ज्ञानपीठ*
समय साक्षी है (1976) *किताबघर प्रकाशन*
तुम्हारे लिए (1978) *किताबघर प्रकाशन*
सु-राज (1980) *किताबघर प्रकाशन*

कहानी-संग्रह

अन्ततः तथा अन्य कहानियाँ (1965) *पूर्वोदय प्रकाशन*
रथचक्र (1975) *पांडुलिपि प्रकाशन*
मनुष्य-चिह्न तथा अन्य कहानियाँ (1976) *किताबघर प्रकाशन*
जलते हुए डैने तथा अन्य कहानियाँ (1980) *किताबघर प्रकाशन*
तपस्या तथा अन्य कहानियाँ (1992) *किताबघर प्रकाशन*
आंचलिक कहानियाँ (1993) *कादंबरी प्रकाशन*
गंधर्व-गाथा (1994) *किताबघर प्रकाशन*
श्रेष्ठ प्रेम कहानियाँ (1995) *प्रवीण प्रकाशन*
चर्चित कहानियाँ(2000) *सामयिक प्रकाशन*
दस कहानियाँ (2001) *किताबघर प्रकाशन*
नंगे पाँवों के निशान (2002) *अमित प्रकाशन*
हिमांशु जोशी की चुनी हुई कहानियाँ (2004) *पराग प्रकाशन*
प्रतिनिधि लोकप्रिय कहानियाँ (2004) *मधुबन प्रकाशन*
इस बार फिर बर्फ गिरी तो (2005) *इंद्रप्रस्थ प्रकाशन*
सागर तट के शहर (2005) *भारतीय ज्ञानपीठ*
इकहत्तर कहानियाँ (2006) *साहित्य भारती*
अगला यथार्थ (2006) *पेंग्विन प्रकाशन*
चुनी हुई कहानियाँ (2009) *नेशनल बुक ट्रस्ट*
पाषाण-गाथा (2010) *रे-माधव प्रकाशन*

कविता-संग्रह

नील नदी का वृक्ष (2008)

वैचारिक संस्मरण-संकलन

उत्तर-पर्व (1995) *किताबघर प्रकाशन*

आठवाँ-सर्ग (1997) *राजपाल एण्ड संस*

साक्षात्कार

मेरे साक्षात्कार (2003) *किताबघर प्रकाशन*

यात्रा-वृत्तांत

यात्राएँ (1997) *किताबघर प्रकाशन*

नार्वे : सूरज चमके आधी रात (1989) *एन.सी.ई.आर.टी*

जीवनी तथा खोज

अमर शहीद अशफाक उल्ला खां (1999) *प्रभात प्रकाशन*

यातना-शिविर में (अण्डमान की अनकही कहानी) (2001) *राजपाल एण्ड संस*

रेडियो नाटक

सु-राज तथा अन्य एकांकी (2001) *साहित्य भारती*

कगार की आग तथा अन्य एकांकी (2003) *किताबघर प्रकाशन*

समय की शिला पर (2004) *राजपाल एण्ड संस*

बाल साहित्य

अग्नि संतान (उपन्यास) 1975

विश्व की श्रेष्ठ लोक-कथाएँ (चौदह भाषाओं में) (1979) *प्रकाशन विभाग*

तीन तारे (बाल उपन्यास) (1985) *किताबघर प्रकाशन*

बचपन की याद रही कहानियाँ (1985) *राजपाल एण्ड संस*

भारतरत्न : पं. गोविन्द बल्लभ पंत (जीवनी) (1989) *नेशनल बुक ट्रस्ट*

काला पानी (चौदह भाषाओं में) (1990) *प्रकाशन विभाग*

हिम का हाथी (कहानी-संग्रह) (1995) *किताबघर प्रकाशन*

अमर कैदी (2002) *नेशनल बुक ट्रस्ट*

सुबह के सूरज (2007) *रे-माधव प्रकाशन*

प्रमुख घटनाएँ एवं सम्मान

1935 : जन्म उत्तराखण्ड के जोस्यूड़ा ग्राम में

1940 : पिताश्री पूर्णानन्द जोशी, स्वाधीनता सेनानी। 41 वर्ष की अल्पायु में देहावसान

1943 : आरंभिक शिक्षा खेतीखान में

1948-1953 : पाँच वर्ष नैनीताल में अध्ययन

1954 : विवाह

1955 : दिल्ली आगमन। स्वतंत्र पत्रकारिता तथा लेखन आदि

1955 : पहली कहानी 'बुझे दीप' नवभारत टाइम्स के रविवासरीय में। उसी वर्ष कहानी 'अन्ततः' को दिल्ली में आयोजित कहानी प्रतियोगिता में प्रथम पुरस्कार

1956 : इन्द्रधनुष हिन्दी डायजेस्ट के संपादकीय विभाग में मानद

1956 : पिछले वर्ष की तरह आयोजित कहानी प्रतियोगिता में 'झुका हुआ आकाश' को प्रथम पुरस्कार

1959 : पुत्र अमित का जन्म

1961 : पुत्र सिद्धार्थ का जन्म

1965 : पहला उपन्यास *अरण्य* उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान लखनऊ द्वारा 'प्रेमचंद पुरस्कार' से सम्मानित

1965 : पहला कहानी-संग्रह *अन्ततः* प्रकाशित।

1968-1971 : हिन्दुस्तान टाइम्स की मासिक पत्रिका *कादम्बिनी* में

1964 : पुत्र असित का जन्म

1971-1993 : *साप्ताहिक हिन्दुस्तान* में वरिष्ठ पत्रकार

डॉ. नामवर सिंह, डॉ. कपिला वात्स्यायन, ममता कालिया, हिमांशु जोशी

आप्रवासी हिन्दी कहानियाँ के लोकार्पण समारोह में

1975 : *छाया मत छूना मन* उपन्यास उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ द्वारा पुरस्कृत

1982 : नार्वे : ओस्लो विश्वविद्यालय द्वारा संचालित 'इंटरनेशनल समर स्कूल' में नार्वेजियन साहित्य पर विशेष अध्ययन

1983 : पत्रकारिता के लिए केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा का गणेश शंकर विद्यार्थी सम्मान

1985 : हिन्दी अकादमी, दिल्ली द्वारा 'भारतरत्न पण्डित गोविन्द बल्लभ पंत' पुरस्कृत

1986 : माताजी का देहांत

1986 : ब्रिटेन : भारत—महोत्सव में सहभागिता।

1986 : स्वीडन : स्पेनिश-भाषी दक्षिण अमेरिकी प्रवासी लेखकों की संस्था 'पेलिकन राइटर्स' द्वारा आमंत्रण। चिली के चर्चित कवि पेलिकन के संचालक सर्जियो बदीला द्वारा सम्मान।

1987 : नेपाल : भारतीय तथा नेपाली लेखकों के सेमिनार में सहभागिता

1987 : राजभाषा विभाग, बिहार सरकार द्वारा *तीन तारे* सम्मानित

1988 : मॉरीशस : विश्व हिन्दी सम्मेलन, पोर्ट लुई में सहभागिता

1991 : अमेरिका : भारत -महोत्सव में सहभागिता

1993 : *साप्ताहिक हिन्दुस्तान* से त्याग-पत्र

1993 : *हिमांशु जोशी की श्रेष्ठ आंचलिक कहानियाँ* को उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान द्वारा 'यशपाल सम्मान'।

1994 : हिन्दी अकादमी, दिल्ली द्वारा *तपस्या तथा अन्य कहानियाँ* पुरस्कृत

1994 : थाईलैण्ड : विश्व रामायण - सम्मेलन में सहभागिता

1996 : त्रिनिडाड : 'विश्व हिन्दी सम्मेलन' में सहभागिता

1996 : उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ से *यातना शिविर में* को गौरवपूर्ण 'अवन्तिबाई सम्मान'।

1997 : कोरिया : टैगोर संस्थान सीयोल द्वारा हिमांशु जोशी के हिन्दी से कोरियाई भाषा में अनूदित कहानी संग्रह *वेटिंग फ़ॉर द सनराइज* का लोकार्पण।

1997 : जापान-यात्रा

1990-2010 : नार्वे की राजधानी ओस्लो से *शांतिदूत* पत्रिका का प्रकाशन। कलकत्ता से प्रकाशित *सागर्भ* में संपादक भी रहे, लगभग एक वर्ष।

1999 : बुल्गारिया : सोफिया विश्वविद्यालय तथा 'ईस्ट- वैस्ट' द्वारा आयोजित संवाद में सहभागिता

2003 : सूरीनाम : पारामारिबो में आयोजित 'विश्व हिन्दी सम्मेलन' में सहभागिता

2004 : डेनमार्क : कोपनहैगन की सांस्कृतिक-यात्रा

2006 : हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग का सर्वोच्च सम्मान 'साहित्यवाचस्पति'

2007 : साहित्य के लिए नार्वे का सुप्रतिष्ठित 'हेनरिक इब्सन अंतर्राष्ट्रीय सम्मान' ओस्लो में आयोजित समारोह में हेनरिक इब्सन के पड़पोते के हाथों दिया गया।

2008 : श्री उदयराज सिंह स्मृति साहित्य सम्मान, पटना।

2010 : चीन : बीजिंग में आयोजित अंतरराष्ट्रीय पुस्तक मेले में भारतीय लेखक के रूप में सहभागिता।

2010 : कुमाऊं विश्वविद्यालय, नैनीताल द्वारा सर्वोच्च मानद उपाधि डी.लिट् (डॉक्टर ऑफ़ लेटर्स) से विभूषित।

हिमांशु जोशी चेकभाषी हिंदी कवि ओदोनेल स्मेकेल के साथ